इतना कह, मंत्री ने, सवा मन कंचन का एक पुतला बनवा, उस में जवाहिर जड़वा, एक छकड़े पर रखवा, चौराहे में खड़ा करवाकर, उस के रखवालों से कहा कि जो कोई इस के देखने को आवे यही उससे कहो, कि जो ब्राह्मण अपने सात बरस के लड़के का राजा को सिर काटने दे, सो इसे ले. यह कहकर चला आया. फिर लोग जो उस के देखने को आते थे उस से चौकीदार यही कहते थे.

दो दिन तो योंहीं बीते. पर तीसरे दिन, उसी नगर का एक दुर्बल सा ब्राह्मण, कि जिस के तीन बेटे थे, वह यह बात सुन घर में आ, ब्राह्मणी से कहने लगा कि एक पुत्र अपना राजा को बलि के वास्ते दे, तो सवा मन सोने का पुतला जड़ाऊ घर में आवे. यह सुन ब्राह्मणी बोली कि छोटे लड़के को न दूंगी. ब्राह्मण ने कहा बड़े को मैं न दूंगा. यह बात सुन, मझले ने कहा कि पिता! मेरे तईं दीजे. उस ने कहा अच्छा. फिर ब्राह्मण बोला कि संसार में धनही मूल है. और धनहीन को सुख कहां. और जो दरिद्री हुआ उस का संसार में आना वृथा है.

इतना कह, मझले लड़के को ले जा, चौकीदारों को दे, उस पुतले को अपने घर ले आया. और इधर उस लड़के को लोग मंत्री के पास ले आये. फिर जब सात दिन बीत गये, वह राक्षस भी आया. राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, पान, वस्त्र ले उस की पूजा की; और उस लड़के को बुला, खड्ग हाथ में ले बलि देने को खड़ा हुआ. इस में वह लड़का, पहले हंसा, पीछे रोया.

इतने में राजा ने खड्ग मारा, कि सिर जुदा हो गया. सच है, जो ज्ञानी कह गये हैं; स्त्री संसार में दुख की खान है, और बिनती का घर, साहस की गिरानेवाली, और मोह की करनेवाली, धर्म की हरनेवाली. ऐसी जो विष की जड़ हो, उसे उत्तम किसने कहा है. और ऐसा कहा है कि आपदा के लिये धन रखिये; और धन देके स्त्री की रक्षा कीजे; और धन स्त्री देके अपने जी को बचाइये.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि हे राजा! मरने के समें आदमी रोता है; तू इस की हक़ीक़त बता, कि वह हंसा क्यों? राजा ने कहा, यह बिचारके वह हंसा कि बालकपन में माता रक्षा करती है; और बड़े हुए से, पिता पालता है; समें असमें रएयत की राजा सहाय करता है. संसार की यह रीत है. और मेरा यह हाल है कि माता पिता ने धन के लोभ से राजा को दिया; और यह खड्ग लिये मारने को खड़ा है; और देवता को बल की इच्छा है. दया किसी को भी न आई. यह सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका. और राजा भी वोंहीं झपटके पहुंचा; और उसे बांध, कांधे पर रख, ले चला.

बीसवीं कहानी।

बैताल बोला कि ऐ राजा! बिशालपुर नाम एक नगर है. वहां के राजा का नाम विपुलेश्वर. उस के नगर में एक बनिया था. तिस का नाम अर्थदत्त. और उस की बेटी का

नाम अनंगमंजरी. शादी उस की कंवलपुर(१) के मुन्नी नाम बनिये से कर दी थी. कितने एक दिनों पीछे वह बनिया समुद्र पार बनज को गया. और यहां जब यह जवान ऊई, तब एक दिन, अपने चौबारे पर खड़ी ऊई, रस्ते का तमाशा देखती थी; कि इस में एक बह्मनेटा, कमलाकर नाम, चला आता था. इन दोनों की चार नज़रे ऊई. और देखते ही मोहित हो गये.

फिर घड़ी एक के पीछे, सूरत संभाल, बह्मनेटा बिरह से ब्याकुल हो अपने दोस्त के घर गया. और यहां यह भी, उस की जुदाई को पीर से, निपट बेचैनी में थी; कि इतने में सखी ने आनके उठाया. पर इसे कुछ अपनी सुध न थी. फिर उस ने गुलाब छिड़का, और खुशबोइयां सुंघाईं; कि इस में उसे होश आया; और बोली कि ऐ कामदेव! महादेव ने तुझे जलाकर भस्म किया, तिस पर भी तू अपनी खुटाई से नहीं चूकता. और बिन अपराध अबलाओं को आनके दुख देता है.

ये बातें कर रही थी, कि सांझ ऊई. और चांद नज़र आया. तब चांदनी की तरफ़ देखके बोली, कि हे चंद्रमा! हम सुनते थे, कि तुम में अम्रत है; और किरनों की राह से अम्रत बरसाते हो. सो आज मेरे पर तुम भी बिष बरसाने लगे. फिर सखी से कहा कि यहां से मुझे उठाकर ले चल, कि मैं चांदनी से जली मरती हूं. तब वह उसे उठाकर चौबारे पर ले गई; और कहा, तुझे ऐसी बातें

(१) कमलपुर.

कहते लाज नहीं आती. तद उस ने कहा कि ऐ सखी! मैं सब जानती हूं. पर मन्मथ ने मुझे मारके निलज्जी की. और मैं धीरज बज्रतेरा करती हूं; पर बिरह की आग से जौं जौं जलती हूं, त्यौं त्यौं मुझे घर बिष सा नज़र आता है. सखी बोली कि तू ख़ातिरजमअ रख. मैं तेरा सब दुख दूर करूंगी.

इतना कह सखी अपने घर गई. और इस ने अपने जी में बिचारा कि इस शरीर को उस के कारन तजूं; और फिर के जनम ले, उस से मिल सुख भोग करूं. यह कामना कर, गले में फांसी डाल, चाहे कि खैंचे, इतने में सखी आ पहुंची. और उस ने झट इस के गले से रस्सी निकालकर कहा, जीने से सब कुछ है; मरने से नहीं. वह बोली कि ऐसे दुख पाने से मरना भला है. सखी ने कहा कि एक घड़ी सुसता, कि मैं उसे जाकर ले आती हूं.

इतना कह वहां गई, जहां कमलाकर था. फिर उसे छिपके देखा तो वह भी बिरह से ब्याकुल हो रहा है. और उस का मित्र गुलाब के पानी से चंदन घिस घिस उस के बदन में लगाता है. और केले के कोमल कोमल पातों से पवन कर रहा है. तिस पर भी बिरह की आग से वह घबराकर जला ही जला पुकारता है; और मित्र से कहता है कि ज़हर ला दे; मैं अपने प्राण त्याग कर इस कष्ट से छूटूं. इस की यह अवस्था देख, उस ने अपने जी में कहा कैसा ही साहसी, पंडित, चतुर, विवेकी, धीर मनुष हो, पर कामदेव उसे एक छण में बिकल कर देता है.

इतना अपने मन में बिचार, सखी ने उस से कहा ऐ कमलाकर! तेरे तईं अनंगमंजरी ने कहा है कि तू आके मुझे जी दान दे. इन्ने कहा यह तो उन्ने मुझे जी दान दिया.

इतना कह उठ खड़ा ऊआ. और सखी इसे अपने साथ लिये ऊए, उस के पास गई. यह वहां जाके देखे तो वह मुई ऊई पड़ी है. फिर इन्ने भी एक आह का नअ्रः मारा कि उस के साथ इस का दम निकल गया. और जब सु बह ऊई, उस के घर के लोग इन दोनों को मरघट में ले गये; और चिता चुनकर उन्हें रखके आग लगाई थी; कि इस में उस का खाविंद भी परदेस से मरघट की राह आ निकला. तब लोगों के रोने की आवाज़ सुनकर यह वहां गया, तो देखता क्या है कि इस की स्त्री पर पुरुष के साथ जलती है. यह भी बिरह से व्याकुल हो उसी आग में जल के मर गया. यह खबर नगर के लोग सुनके आपस में कहने लगे, कि ऐसा अचरज न आंखों देखा न कानों सुना.

इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा! इन तीनों में से कौन सा अधिक कामी ऊआ? राजा बोला कि उस का खाविंद अधिक कामी ऊआ. बैताल ने कहा किस कारण. राजा ने कहा जिन्ने, अपनी नारी को और के अर्थ मुई देख, क्रोध त्याग कर, उस के प्रेम में मगन हो जी दिया, यह अधिक कामी ऊआ. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. राजा भी वोंही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

इक्कीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! जयस्थल नाम नगर. वहां का वर्द्धमान नाम राजा. उस के नगर में बिष्णुस्वामी नाम ब्राह्मण. उस के चार बेटे; एक ज्वारी, दूसरा कसबीबाज़, तिसरा छिनला, चौथा नास्तिक. एक दिन वह ब्राह्मण अपने बेटों को समझाने लगा, कि जो कोई जूआ खेलता है उस के घर में लक्ष्मी नहीं रहती. यह सुन वह ज्वारी अपने जी में बऊत दिक ऊआ. और फिर उन्ने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखता है, कि ज्वारी के नाक कान काट, देस से निकाल दीजे, कि और लोग जूआ न खेलें. और ज्वारी के जोरू लड़कों को घर में होते भी घर में न जानिये. क्यौं कि नहीं मअ्लूम किस वक्त हार दे. और जो बेस्वा के चरित्रों पर मोहित होते हैं सो अपने जी को दुख बिसाते हैं. और कसबी के बस में हो सरबस अपना दे अंत को चोरी करते हैं. और ऐसा कहा है कि जो नारी आदमी के मन को एक घड़ी में मोह दे, ऐसी नारी से ज्ञानी दूर रहते हैं; और अज्ञानी उस से प्रीत कर अपना सत, शील, जश, आचार, बिचार, नेम, धर्म सब खोते हैं. और उस को अपने गुरू का उपदेस भला नहीं लगता. और ऐसा कहा है, कि जिस ने अपनी लाज खोई दूसरे को वह कब बेइज़्ज़त करने से डरता है.